जो व्यक्ति जल्दी रोता है, जल्दी क्रोधित होता है या जल्दी आहत हो जाता है, वह व्यक्ति सामान्यत: जल्दी भूल भी जाता है, जल्दी हँस लेता है और फिर से आनंदित हो जाता है। लेकिन जो व्यक्ति देर से क्रोधित होता है या कठिनाई से रोता है, जब वह क्रोधित हो जाता है तो उसका क्रोध शांत होने में बहुत समय लगता है।

एक छोटे बच्चे को ही ले लीजिए: वह दिन में पाँच–छह बार भी रो सकता है, छोटी-छोटी बातों पर; लेकिन कुछ ही मिनटों बाद सब भूलकर वह फिर से आपके साथ खेलने लगता है मानो कुछ हुआ ही न हो। जबकि एक वयस्क शायद सालों तक एक आँसू भी न बहाए, लेकिन जिस दिन वह रोए, तो समझिए कोई गहरी पीड़ा है—शायद मृत्यु, गहरा आघात या गंभीर चोट—और वह पीड़ा थोड़ी देर में नहीं जाती, बल्कि महीनों या सालों में ही शांत होती है।

इसी प्रकार, बाइबल हमें स्पष्ट बताती है कि स्वर्ग में हमारा परमेश्वर, जिसे हम प्रतिदिन आराधते हैं, अत्यंत धीरजवान है, दया और अनुग्रह में महान है, क्रोध करने में धीमा है। हम स्वयं देखते हैं कि लोग खुलेआम नग्नता, अत्याचार, हत्याएँ, निर्दोष बच्चों के अंग काटकर बेचते हैं, फिर भी परमेश्वर तत्काल दंड नहीं देता। यदि हम या आप परमेश्वर होते, तो शायद एक भी न बचता। परंतु परमेश्वर वैसा नहीं है, उसने कहा है:

यहोवा क्रोध करने में धीमा और करुणा में महान है (नहूम 3:1; गिनती 14:18)।

यहोवा यहोवा, दयालु और अनुग्रहकारी, क्रोध करने में धीमा और अति करुणामय और सत्यवान है (निर्गमन 34:6–7)।

यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु है, क्रोध करने में धीमा और अति करुणामय है (भजन 145:8)।

योना 4:2 और नहेमायाह 9:17 भी यही पुष्टि करते हैं।

परमेश्वर की यह करुणा इस बात का संकेत नहीं है कि वह लोगों के पाप को अनंतकाल तक सहता रहेगा। वह चाहता है कि सब मन फिराएँ। लेकिन जब लोग बार-बार चेतावनी के बाद भी पश्चाताप नहीं करते, तो

जैसे कोई धीमा-क्रोधित व्यक्ति एक बार क्रोधित हो जाए तो उसका क्रोध थमता नहीं, वैसे ही परमेश्वर के न्याय के दिन कोई प्रार्थना, कोई आँसू उस क्रोध को रोक नहीं सकेंगे।

नूह के समय में लोगों ने परमेश्वर के धीरज को हल्के में लिया। वर्षों तक प्रचार सुनने के बाद भी उन्होंने सोचा कि कोई दंड नहीं आएगा, और नूह को मूर्ख समझा। लेकिन जिस दिन जल-प्रलय आया, उस दिन परमेश्वर के क्रोध की गंभीरता उन्होंने देखी—सिर्फ आठ लोग बच पाए। लूत के समय भी ऐसा ही हुआ। प्रभु ने कहा है, “जैसे नूह और लूत के दिनों में हुआ, वैसे ही होगा प्रभु के दिन” (संदर्भ)।

इसी तरह इस्राएलियों के साथ हुआ जब उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं की चेतावनी को ठुकराया। अंत में “यहोवा का क्रोध इतना बढ़ा कि चंगाई का कोई उपाय न रहा” (2 इतिहास 36:15–17)। नबूकदनेस्सर आया और उन्हें मार डाला या बंधुआई में ले गया।

भाई, यह मत सोचो कि यदि तुम आज रैप्चर (उठा लिये जाने) में पीछे रह गए तो तुम्हें बाद में दूसरा मौका मिलेगा। “मनुष्य पिता के पास नहीं आ सकता, केवल मेरे द्वारा” (यीशु मसीह ने कहा)। रैप्चर के बाद केवल परमेश्वर के क्रोध का सामना होगा।

ध्यान रहे, यह मसीह-विरोधी की क्लेश की अवधि से भिन्न है।

“प्रभु का दिन” विशेष रूप से परमेश्वर के प्रतिशोध का दिन है। योएल 2 कहता है:

प्रभु का दिन महान और अत्यन्त भयानक है; कौन उसका सामना कर
सकता है?

यशायाह 13:6–13 भी यही वर्णन करता है—मानव “ओफीर के सोने से भी दुर्लभ” हो जाएगा।

प्रकाशितवाक्य 16 में सात कटोरों के न्याय का विवरण है: घाव, समुद्र और नदियों का रक्त बनना, सूर्य की गर्मी से जलना, अंधकार, यूफ्रात नदी का सूखना, आत्माओं का एकत्र करना, हार-मगिदोन का युद्ध, महान भूकंप और आकाश से भारी ओलों की वर्षा। यह सब परमेश्वर के क्रोध के अंतिम प्रगटीकरण हैं।

इन सबके बाद न्याय और आग की झील होगी। यह सब उन लोगों के लिए है जो रैप्चर से पहले मन फिराने से इनकार करते हैं।

2 पतरस 3:8–11 कहता है:

प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसा कि
कुछ लोग देर समझते हैं; परन्तु वह तुम्हारे विषय में धीरज
धरता है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई नाश हो, परन्तु सबको
मन फिराव तक पहुँचाना चाहता है। परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आएगा…

आज ही यदि तुम पूरे मन से प्रभु को अपना जीवन सौंप दो—सिर्फ आधा नहीं—तो वह तुम्हारे सारे पाप क्षमा कर देगा। यही वह तुम्हारे जीवन में चाहता है।

सपन्याह 2:3 कहता है:

हे पृथ्वी के सब दीन लोगो, जो उसकी आज्ञाएँ मानते हो, तुम
यहोवा को खोजो; धर्म और नम्रता को खोजो; सम्भव है कि तुम
यहोवा के क्रोध के दिन में बचाए जाओ।

निर्णय तुम्हारा है। मेरी प्रार्थना है कि तुम आज ही मन फिराओ, बाइबिल के अनुसार बहुत से जल में और यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा लो, और पवित्र आत्मा से जन्म पाओ। यही एकमात्र सुरक्षा है “प्रभु के क्रोध के दिन” से।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP....

Share on:
WhatsApp